सी-डैक
CDAC

अभिव्यक्ति

पंचम अंक

सितम्बर, 2013

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

संपादक :
के. के. अरोड़ा
जे. सी. सेठी

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

रचनाकार: चिन्मय गर्ग

अभिव्यक्ति

संपादक
के. के. अरोड़ा
जे. सी. सेठी

संपादन सहयोग
डॉ. आरती नूर
कल्पना जौहरी
सुभाष चंद

विशेष सहयोग
नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी–डैक, नोएडा और संपादकों का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सी-डैक
CDAC
प्रगत संगणन विकास केन्द्र
अनुसंधान भवन, सी–56/1, संस्थागत क्षेत्र
सैक्टर– 62, नोएडा– 201307
फोन: 0120–3063311–13, फैक्स– 0120–3063317

विषय सूची

क्र.सं.	रचना	लेखक / संकलनकर्त्ता	पृष्ठ सं.
1.	ट्विंकल ट्विंकल लिटिल एल ई डी (लेख)	विनोद कुमार	09
2.	मोबाइल लर्निंग– ई–लर्निंग का अगला पड़ाव (लेख)	लक्ष्मी कल्याणी	10
3.	अपने मोबाइल फोन को सुरक्षित कैसे करें (लेख)	अमित कुमार	11
4.	समय (कविता)	प्रिया	12
5.	एक्सटेंडेड वेलिडेशन सिक्योर सोकेट लेयर (लेख)	सुजीत कुमार	13
6.	हिंदी और विकिपीडिया (लेख)	अमिय मोहंती	14
7.	सॉफ्टवेयर परियोजनाएं क्यों असफल होती हैं और उनको सफल बनाने के उपाय (लेख)	नितिन कुमार वार्ष्णेय	16
8.	मैं अकेला हो गया हूँ (कविता)	प्रिया	18
9.	धन्य भारतीय संस्कृति (कविता)	संजय कुमार	19
10.	तीन की महानता (कविता)	दीपक कुमार आर्य	19
11.	न निराश हो न होने पर (कविता)	रानू रत्नावत	20
12.	महिमना पार (लेख)	प्रीति राजदान	21
13.	यह देश है हमारा (कविता)	रामजी गुप्ता	22
14.	भूखण्ड में आई बाढ़ – प्राकृतिक आपदा या प्रकृति का जवाब बढ़ते मानव हस्तक्षेप को (लेख)	नेहा शर्मा	23
15.	वट वृक्ष (कविता)	अभिषेक शर्मा	24
16.	दिव्य घंटी (डिवाईन बैल) (लेख)	राजेन्द्र सिंह	25
17.	नेत्रदान – सामाजिक दायित्व (लेख)	चिन्मय गर्ग	27
18.	कंप्यूटर पर काम करने वालों को सलाह (लेख)	अनिल कुमार	28
19.	रोजमर्रा के काम आने वाले कुछ उपयोगी बातें (लेख)	भुबन दास	29
20.	सुकून (कविता)	कविन्द्र सिंह बोरा	30
21.	मेरा इश्क (कविता)	निशा सिंह	30
22.	बढ़ते अपराध – घटते मानव मूल्य (लेख)	गौरव गोत्रा	31
23.	वन्देमातरम् का महत्व तथा अर्थ (लेख)	दीपक कुमार आर्य	32
24.	जिन्दगी (कविता)	विजयदीप सिन्हा	33
25.	सुख–दुख जीवन के अंग (लेख)	रामजी गुप्ता	34
26.	उड़ान (कविता)	शिखा सेठ	35
27.	सुखी वैवाहिक जीवन का राज़ (चुटकुले)	शाहिदा शर्मा	36

सी-डैक
CDAC

कार्यकारी निदेशक, सी-डैक, नोएडा का संदेश

मुझे इस केन्द्र की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का पांचवा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए गर्व महसूस हो रहा है। इस केन्द्र के लेखकों ने विविध विधाओं में विभिन्न विषयों पर अपनी इन सुन्दर कृतियों के माध्यम से अपने उद्गार प्रकट करने का सफल प्रयास किया है। पत्रिका में प्रकाशित कविता, कहानी, व्यंग्य तथा लेखों से लेखकों तथा लेखिकाओं के विभिन्न पहलुओं पर मूल्यवान विचार आपको पढ़ने को मिलेंगे तथा मौलिक लेखन को प्रोत्साहन भी मिलेगा।

मेरा विश्वास है कि ऐसी पत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा इसके उत्तरोत्तर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करती हैं।

मैं इन सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हिन्दी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के पांचवे अंक के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

बी के मूर्ती

(डॉ. बी. के. मूर्ती)

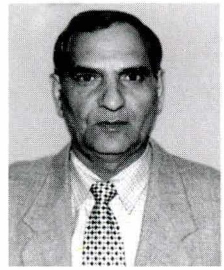

संपादकीय

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी स्वाधीनता का प्रतीक है। हिन्दी में स्वदेशी शासन का भाव झलकता है। हिन्दी स्वदेशी विचारों, आचारों, वेषभूषा तथा समूची जीवन शैली की संवाहक है। इस रूप में हिन्दी राष्ट्रीय पहचान एवं गौरव के रूप में स्थापित है। हिन्दी देश की एकता का प्रतीक भी है। यह 'एक देश, एक औपचारिक भाषा' के सूत्र का परिचायक भी है। देश को एक सूत्र में बांधने वाली जनसंपर्क की भाषा हिन्दी को अपनाने का संविधान निर्माताओं ने निर्णय लिया। अतः अपने कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं विकास की दिशा में इस केन्द्र द्वारा गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का प्रकाशन किया जा रहा है।

हम अपने कार्यकारी निदेशक डॉ. बी. के. मूर्ती के आभारी हैं जिन्होंने गृह पत्रिका को प्रकाशित करने में हमारा मार्गदर्शन करते हुए हमें प्रोत्साहित किया। हम अपने संपादक मंडल के भी आभारी हैं जिनके कुशल अनुभव तथा योगदान के कारण 'अभिव्यक्ति' आपके समक्ष प्रस्तुत है।

'अभिव्यक्ति' के इस अंक में रचनाकारों के विभिन्न पहलुओं पर बहुमूल्य विचार इन रचनाओं के माध्यम से पढ़े जा सकते हैं।

आशा है कि 'अभिव्यक्ति' के आगामी अंकों को और रोचक बनाने के लिए आपके मूल्यवान सुझाव मिलते रहेंगे।

(के. के. अरोड़ा)
संयुक्त निदेशक

(जे. सी. सेठी)
हिन्दी अधिकारी

ट्विंकल ट्विंकल लिटिल एल ई डी

– विनोद कुमार,
वरिष्ठ व्याख्याता

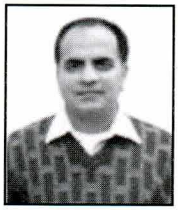

एल.ई.डी. (लाइट एमिटिंग डायोड) एक अर्ध चालक (Semi Conductor) डिवाइस है जोकि अर्धचालक प्रौद्योगिकी पर आधारित है।

एल.ई.डी.– इसमें विद्युत धारा प्रवाहित करने पर प्रकाश उत्सर्जित होता है। यह प्रकाश इसकी बनावट के अनुसार तथा किसी भी कलर का हो सकता है।

एल.ई.डी. कई प्रकार के होते हैं तथा इनमें मिनिएचर, फ्लैशिंग, हाई पावर, एल्फा–न्यूमेटिक मल्टीकलर तथा ओ.एल.ई.डी. प्रमुख हैं।

यह एक इलैक्ट्रॉनिक डिवाइस है, जिसमें से विद्युत धारा गुजरते ही उसके इलैक्ट्रोन पहले तो आवेशित हो जाते हैं और उसके पश्चात अपनी आवेशित ऊर्जा को प्रकाश के रूप में उत्सर्जित कर देते हैं। इसका मुख्य प्रकाश उत्पादन घटक गैलियम आर्सेनाइट होता है। यही तत्व मुख्य घटक विद्युत ऊर्जा को प्रकाश ऊर्जा में परिवर्तित करता है। इसकी विशेषता यह है कि इसे किसी प्लास्टिक फिल्म में भी लगाया जा सकता है।

एल.ई.डी. पारम्परिक प्रकाश स्रोतों की तुलना में बहुत उन्नत है, जिसका मुख्य कारण ऊर्जा की कम खपत, लम्बा जीवन काल, टिकाऊपन, छोटा आकार और तेज स्विचिंग आदि है। एक विद्युत बल्ब औसतन 1000 घंटे लाइट देता है जबकि एल.ई.डी. लगभग एक लाख घंटे तक प्रकाश दे सकते हैं।

एल.ई.डी. का इतिहास बहुत पुराना है, इसका आविष्कार ब्रिटिश वैज्ञानिक मारकोनी ने 1920 के दशक में किया था। एल.ई.डी. का उपयोग घड़ियों, टेलीफोन, कैलकुलेटर, रेडियो इत्यादि में किया जाता है। आधुनिक एल.ई.डी. उच्च चमक की दृश्य, इन्फ्रारेड और अल्ट्रावायलेट बेव लेंग्थ में उपलब्ध है।

इसके अलावा, आजकल श्वेत (White) नीली (Blue) व बहुरंगी (Multi Colour) एल.ई.डी. भी बाजार में उपलब्ध है और यह ऊर्जा की कम खपत के कारण बहुत उपयोगी साबित हो रही है। इसने हमारे घरों की व त्यौहारों की सजावट का पारंपरिक रूप ही बदल दिया है। आज दिवाली या अन्य अवसर पर हमारे घरों में टिमटिमाती हुई एल.ई.डी. देखी जा सकती हैं।

एल.ई.डी. सजावट के अलावा भी विभिन्न प्रकार से उपयोगी है। जैसे– छोटे पैनल के उपकरणों में या यन्त्रों तथा दशा सूचकों में दशा बताने के लिए, विज्ञापन आदि के डिसप्ले बोर्डो को अंधेरे में देखने के लिए जैसे टार्च इत्यादि, सुन्दर सजावट के लिए, सड़क पर संकेतो के लिए प्रयोग की जाती है।

★★★

मोबाइल लर्निंग – ई–लर्निंग का अगला पड़ाव

– लक्ष्मी कल्याणी
वरिष्ठ व्याख्याता

इलैक्ट्रॉनिक लर्निंग अर्थात् ई–लर्निंग ने पिछले दस सालों में शिक्षा के क्षेत्र में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। यह शिक्षा का एक ऐसा माध्यम है जिससे लर्नर कभी भी, किसी भी समय, कहीं से भी अपनी इच्छा और समय के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकता है। ये लर्नर विद्यार्थी , कामकाजी लोग, ऑफिसर या फिर आम आदमी कोई भी हो सकते हैं। सिर्फ एक कंप्यूटर और इन्टरनेट कनेक्शन के द्वारा ई–लर्निंग हो सकती है। इसी आसान एवं महत्वपूर्ण तरीके के कारण ई–लर्निंग का अब सरकारी संस्थानों, प्राइवेट कंपनियों, कॉलेजों आदि द्वारा पढ़ाने के लिए भरपूर उपयोग किया जा रहा है।

असंख्य सरकारी योजनाओं एवं प्रोजेक्टों जैसे NPTEL, NKN, NMEICT इत्यादि ने ई–लर्निंग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। परिणामस्वरूप, अब देश के कोने–कोने में स्थित अधिकांश शिक्षा केन्द्रों, संस्थानों, यूनिवर्सिटी (महाविद्यालयों) एवं कॉलेजों में ई–लर्निंग का प्रयोग किया जा रहा है।.

आपको मालूम ही होगा कि हाल के दशक में मोबाइल का उपयोग हर क्षेत्र में हो रहा है। इसी प्रकार, इसका उपयोग अब पिछले तीन–चार सालों से शिक्षा के क्षेत्र में भी होने लगा है। जहां ई–लर्निंग में कंप्यूटर के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है, वहीं मोबाइल लर्निंग यानि मोबाइल डिवाइस द्वारा लर्निंग जैसे स्मार्ट फोन, टैबलेट, पॉमटॉप इत्यादि डिवाइस द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रकार ई–लर्निंग एक कदम और आगे बढ़ गई है और यहां तक कि अब ई–लर्निंग चलते–फिरते (On the move) हो सकती है।

शिक्षा का यह माध्यम विद्यार्थियों में बहुत लोकप्रिय हो गया है क्योंकि विद्यार्थी सबसे ज्यादा मोबाइल का प्रयोग करते हैं। चाहे इंटरनेट द्वारा या फिर ऑफलैन इंस्टॉल्ड एप्लीकेशन द्वारा मोबाइल डिवाइस से शिक्षा प्राप्त की जा सकती है।

आकाश टैबलेट – मोबाइल लर्निंग प्रदान करने की एक सस्ती और महत्वपूर्ण योजना है। यह आई.आई.टी. मुंबई का MHRD-NMEICT प्रोजेक्ट है। भारत के ज्यादा से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों को ई–लर्निंग द्वारा शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से वितरित किए जा रहे हैं।

सी–डैक में आकाश टैबलेट का उपयोग MHRD Sponsored ई–लर्निंग प्रोजेक्ट द्वारा बनाए गए कोर्सेस को Access करने के लिए किया जा रहा है। ये टैबलेट विद्यार्थियों, फैकल्टी, प्रोजेक्ट इंजीनियरों इत्यादि को दिए गए हैं जो इन कोर्सेस को आकाश टैबलेट द्वारा Access कर सकते हैं।

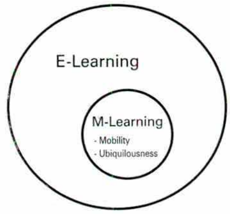

इसी तरह क्विज, गेम्स इत्यादि एप्लीकेशन भी इस टैबलेट से कर सकते हैं। छोटे आकार का होने के कारण हाथ में लेकर चलते–फिरते उपयोग में लाया जा सकता है और यह सस्ता भी है। परिणामस्वरूप, मोबाइल लर्निंग अब सही अर्थों में ई–लर्निंग का अगला पड़ाव बन गया है।

अपने मोबाइल फोन को सुरक्षित कैसे करें

– अमित कुमार
परियोजना अभियंता–II

आज मोबाइल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। हम आज के आधुनिक जीवन में बिना मोबाइल के अपंग सा महसूस करते हैं। आजकल की सभी जरूरी जानकारी जैसे– आपकी पर्सनल मेल, आपकी बैंक की जानकारी सब कुछ मोबाइल में स्टोर रहती है और अगर ऐसे में आपका मोबाइल फोन चोरी या गुम हो जाए तो यह आपके लिए असहनीय होगा। इसलिए आज हमें ऐसे सॉफ्टवेयर की आवश्यकता है जो हमारे मोबाइल फोन की लोकेशन बताए और आपके महत्वपूर्ण डेटा को सुरक्षित भी रखे।

इसके लिए आपको एंटी थेफ्ट सॉफ्टवेयर अपने मोबाइल में इंस्टॉल कराने होंगे। आजकल कुछ मोबाइल कंपनियां अपने फोन में प्री–इंस्टॉल एंटी थेफ्ट साफ्टवेयर दे रही हैं। लेकिन अगर आपके फोन में यह सुविधा नहीं है तो कोई अच्छा एंटी थेफ्ट सॉफ्टवेयर इंस्टॉल करवा सकते हैं।

कितनी आवश्यकता

यह सॉफ्टवेयर आपको अपने फोन के एस.एम.एस. को लॉक करने से लेकर अपना डेटा रिकवर या डीलिट करने का विकल्प भी देता है। आपके फोन की सिम बदलने की स्थिति में एंटी थेफ्ट एप्स एस.एम.एस. के जरिए फोन नंबर और टावर लोकेशन आपके दूसरे नंबर पर भेज देता है। जीवीएस के जरिए भी लोकेशन ट्रैक की जा सकती है। हम यहां पर आपको कुछ अच्छे एंटी थेफ्ट सॉफ्टवेयर के बारे में जानकारी देते हैं।

periodic.phonelocator.mobi - यह एक फ्री सॉफ्टवेयर है जो नोकिया की सिबीयन 60 सीरीज के अलावा सैमसंग और सोनी एरिक्सन को सपोर्ट करता है। इसी वैब साइट पर ही लोकेशन ट्रेस की जा सकती है। साथ ही सिम बदलने की जानकारी की एस.एम.एस. से दूसरे फोन पर मिलती रहती है।

www.f-secure.com - एंटी वायरस मार्केट में 'एफ सिक्योर' एक भरोसेमंद नाम है। इसकी एंटी थेफ्ट एप्लीकेशन भी है। यह सिबियन, एंड्रायड और विंडोज ओ.एस. को सपोर्ट करता है। चोरी होने पर फोन रिमोटली लाक कर सकते हैं, रिमोटली डेटा रिमूव कर सकते हैं और लोकेशन का पता लगाने के अलावा सिम ट्रैक कर सकते हैं। इसका एंटी थेफ्ट प्रोटेक्शन फ्री है। लेकिन यह एक सिक्योर मोबाइल सिक्योरिटी पेड सर्विस है जो कि लगभग रुपए 2500 से 3000 में उपलब्ध है।

www.kaspersky.co.in - केसपर्सकी के कम्पलीट मोबाइल प्रोटेक्शन पैकेज में प्राइवेसी प्रोटेक्शन, अनवान्टिड कॉल्स, एस.एम.एस. ब्लॉक, पेरेंटल कंट्रोल, एंटी मालवेयर और एंटी वायरस प्रोटेक्शन के अलावा फायरवाल आप्शन भी है। एंटी थेफ्ट एप्स में सिम चेंज की जानकारी के साथ रिमोटली फोन ब्लॉक और गूगल मैप पर जीपीएस फाइंड का ऑप्शन भी है। यह मात्र रुपए 680 में उपलब्ध है।

www.wevesecure.com - वेव सिक्योर से आप फोन को रिमोटली लॉक कर सकते हैं। डेटा एक्सेस और डिलीट कर सकते हैं। फोन बैकअप के अलावा लोकेशन, सिम ट्रैकिंग और चोरी के बाद फोन से की गई कॉल नंबर भी एक्सेस कर सकते हैं। यह एड्रांयड, सिबियन, ब्लैकबेरी, विंडोज और जावा एनेब्लड हैंडसेट को सपोर्ट करती है।

www.trackandprotect.com - ट्रैक एंड प्रोटेक्ट की और पेड दोनो ही वर्जन में उपलब्ध है। यह समय–समय पर पासकोड, चेक फोन, स्टार्टअप पर पासकोड, सिम चेंज करने पर आटो फोन लॉक गलत पासकोड पर स्क्रीन लॉक, फोन लोकेशन और सिम ट्रैक के अलावा 3 बार पासकोड खोलने की कोशिश पर चोर का फोटो आपके फोन पर भेज देगी।

www.microlnsts.net - माइक्रो टेक्नोलोजी की एंटी थेफ्ट एप्लीकेशन काफी कारगर है। यह सिबियन ब्लैकबेरी और विंडोज ओप्स को सपोर्ट करता है। यह एसएमएस के जरिए लोकेशन और सिम ट्रैकिंग करता ही है। ऑपरेटर बेस्ड जीएसएम सेल टावर लोकेशन भी देता है।

★★★

समय

– प्रिया
पी.एस.एस.

समय बलवान है
समय सर्वशक्तिमान है
समय की कद्र करना, हमारा प्रथम काम है।
जो समय की कद्र नहीं करता है वह जीवन में पछताता है।
किंतु
जो समय की कद्र करता है, हमेशा मुस्कुराता है
इसलिए भाइयों और बहनों
समय की कद्र करना सीखो
समय किसी के लिए नहीं रुकता
जो समय को ठुकराता है
समय उसको ठुकराता है।

★★★

एक्सटेंडेड वेलिडेशन सिक्योर सोकेट लेयर (ई.वी.एस.एस.एल.)

– सुजीत कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

आज इन्टरनेट के इस युग में बहुत सारी सुविधाएँ हमें घर बैठे मिल जाती हैं। हम घर बैठे ही बैंकिंग सुविधा, विभिन्न प्रकार की खरीदारी आदि का उपयोग प्रायः करते ही रहते हैं। विभिन्न इंटरनेट साइटों द्वारा हमेशा यह प्रयास रहता है की उसके ग्राहकों के द्वारा दिए जाने वाले व्यक्तिगत विवरण का दुरूपयोग न होने पाए।

सुरक्षा की इसी दृष्टि से ज्यादातर वाणिज्यिक कंपनियां एचटीटीपी (http) की बजाय एचटीटीपीस (https) का उपयोग करती हैं। हमने https साईट को खोलने पर अक्सर देखा होगा हमारे ब्राउज़र में 🔒 का निशान आ जाता है।

https://ihrms.cdac.in इसका अर्थ यह होता है की इस साईट पर हमारे द्वारा दी गयी जानकारी सुरक्षित रहेगी और कोई हैकर उसे बीच में आसानी से नहीं पढ़ पायेगा।

https के उपयोग से आपके द्वरा इन्टनेट पर आदान प्रदान की गयी सारी जानकारी एक गुप्त कोड के रूप में रहती है जिसका कोई भी आसानी से दुरूपयोग नहीं कर सकता है। आपके द्वारा दी गयी जानकारी को गुप्त या एन्क्रिप्टेड रखने में एस.एस.एल. सर्टिफिकेट (SSL Certificate) का योगदान होता है।

SSL Certificate में 'सार्वजनिक', 'निजी' 'कुंजी युग्म' ("Public" "Private" "Key pair") का उपयोग होता है। किसी भी वेबसाइट को सत्यापन के बाद प्रमाणन प्राधिकारी (Certifying Authority) द्वारा एस.एस.एल. सर्टिफिकेट जारी किया जाता है। एस.एस.एल. सर्टिफिकेट का एक आधुनिक संस्करण है इ.वी. एस.एस.एल. (EVSSL)।

EVSSL का अर्थ है एक्सटेंडेड वेलिडेशन सिक्योर सोकेट लेयर (Extended Validation Secure Socket Layer). EVSSL हमें सुरक्षा की एक और कड़ी प्रदान करता है और हमें फिसिंग (Phising), man-in-the-middle अटैक जैसी चीजों से बचाता है। नीचे कुछ कंपनियों की वेबसाइट EVSSL का उपयोग दर्शाया गया है।

EVSSL का उपयोग करने वाली वेबसाइट में हरे रंग की पट्टी में कंपनी या बैंक का नाम साथ रहता है। EVSSL देने के लिए सर्टिफिकेट प्रदान करने वाले प्रमाणन प्राधिकारी द्वारा बहुत ही सख्त नियमों का पालन किया जाता है। EVSSL के उपयोग से वेबसाइट और उसके उपयोगकर्ता, दोनों को ही इस बात का आश्वासन रहता है की उनके द्वरा इन्टरनेट पर किया जाने वाला लेनदेन सुरक्षित है।

हिंदी और विकिपीडिया

– अमिय मोहंती
परियोजना अभियंता

विकिपीडिया इंटरनेट पर आधारित एक मुक्त विश्वकोश परियोजना है। यह विकि के रुप में है, यानी एक ऐसा जाल पृष्ठ जो सभी को इसका संपादन करने की छूट देता है। विकिपीडिया शब्द विकि और इनसाइक्लोपीडिया शब्दों को मिला के बना है। देखा जाए तो विकिपीडिया स्वयंसेवकों के सहयोग से निर्मित है, जिसकी भी वेब तक पहुँच है वह विकिपीडिया पर लिख सकता है और लेखों का संपादन कर सकता है। विकिपीडिया के मुख्य सर्वर टैंपा, फ्लोरीडा में हैं, अतिरिक्त सर्वर एम्सटर्डम और सियोल में हैं।

निपुण लोगों द्वारा बनाए गए विश्वकोश न्यूपीडिया के पूरक के रूप में 29 जनवरी, 2001 को इसकी शुरुआत हुई। अब यह विकिमीडिया फाउंडेशन द्वारा संचालित है जो एक ग़ैर–लाभकारी संस्था है। इसमें 46 लाख से भी ज़्यादा लेख थे, सिर्फ़ अंग्रेज़ी भाषा में ही 12 लाख से भी ज़्यादा लेख थे। यह 200 से भी ज़्यादा भाषाओं में है, जिसमें से 15 भाषाओं में 50 हज़ार से भी ज़्यादा लेख हैं। जर्मन भाषा के विकिपीडिया को डीवीडी में भी वितरित किया गया है। विकिपीडिया के संस्थापक जिमी वेल्स के शब्दों में यह 'विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए, उनकी अपनी भाषा में एक बहुभाषीय, मुक्त, सबसे अधिक मुमकिन गुणवत्ता वाला विश्वकोश बनाने और वितरित करने का एक प्रयत्न है।'

हालाँकि विकिपीडिया की विश्वस्तता और सत्यता पर काफ़ी विवाद भी होता रहा है। वेबसाईट पर आसानी तथा बर्बरता के साथ संपादन करने की क्षमता, असमान गुणवत्ता और कई भाषाओं में तथ्य के परोक्ष लोकप्रियता की प्राथमिकता इत्यादि की काफ़ी आलोचनाएँ हुई हैं। फिर भी, इसके मुक्त वितरण, निरंतर और काफ़ी संख्या में बदलाव, विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के समावेश ने इसे इंटरनेट पर विश्व के सबसे अधिक लोकप्रिय निर्देशिका संसाधनों में से एक बना दिया है।

विकिपीडिया को मई 2004 में दो प्रमुख सम्मान मिलेः पहला प्रिं आर्स इलेक्ट्रोनिका द्वारा गोल्डन नीका (Nica) फार डिजीटल कम्युनीटीज़, दूसरा कमुनिटी क्षेत्र में जजों द्वारा वेबी सम्मान। साथ ही विकिपीडिया को कई स्रोतों से प्रशंसा भी मिली है, जिनमें प्रमुख हैं: बीबीसी न्यूज़, वाशिंगटन पोस्ट, द इकोनॉमिस्ट, न्यूज़ वीक, टाइम मैगज़ीन और रीडर–डाइजेस्ट। टाइम मैगज़ीन ने विकिपीडिया के संस्थापक जिमी वेल्स को वर्ष 2006 के विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक भी बताया।

विभिन्न भाषाओं में संस्करण

विकिपीडिया के 151 भाषाओं में सक्रिय संस्करण हैं। कुल 229 भाषाओं में संस्करण हैं जो भिन्न अवस्थाओं में हैं। भिन्न भाषाओं के संस्करण स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं। इन संस्करणों के अंशों का एक–दूसरे से कोई संबंध नहीं

है, न ही इनके लेखों का कोई संबंध है, और न ही किसी भी लेख के एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद की आवश्यकता। विकिपीडिया में स्वचालित अनुवाद का स्पष्ट निषेध है, हालाँकि निपुण लोगों द्वारा अनुवाद का स्वागत भी होता है। भिन्न भाषाओं के संस्करणों को समान नीति जैसे कि 'निष्पक्ष दृष्टिकोण' के ज़रिए बाँधा गया है। लेखों और चित्रों को भिन्न संस्करणों के बीच इंटरविकि (interwiki) के ज़रिए जोड़ा जा सकता है, लेखों के अनुवाद के लिए अनुरोध भी किया जा सकता है। हालाँकि अनुवादित लेख काफ़ी कम संख्या में हैं। मुख्य भाषाओं में अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, पोलिश, जापानी, डच, स्वीडिश, इतालवी, पुर्तगाली और स्पैनिश शामिल हैं।

हिंदी विकिपीडिया

हिंदी विकिपीडिया का तीव्र विकास, हिंदी और हिंदी भाषी लोगों के लिए अच्छा है। हिंदी में विकिपीडिया की शुरुआत जुलाई 2003 में हुई थी। आज हिंदी विकिपीडिया में क़रीब 1500 मुख्य लेख हैं। इसमें भूगोल, इतिहास, व्यक्तिगत जीवन, विज्ञान, राजनीति, फ़िल्में, खेल और साहित्य के लेख प्रमुख हैं। हिंदी विकिपीडिया में स्वयंसेवकों का घोर अभाव है। कई लेख अभी पूरे नहीं हैं। हिंदी साहित्य, भारत और संबंधित विषयों की जानकारी हिंदी से ज्यादा तो अँग्रेज़ी और जर्मन विकिपीडिया पर ही है।

विकिपीडिया के काफ़ी फ़ायदे हैं, इन फ़ायदों को हिंदी बोलने और समझने वाले लोगों तक पहुँचाने के लिए हमें हिंदी विकिपीडिया का विकास करना चाहिए। विकि स्वरूप के कारण लेखों की कड़ियों को शब्दों के साथ जोड़ना आसान है, इससे न केवल लेख के बारे मे जानकारी मिलती है, बल्कि उससे जुड़ी अन्य रोचक जानकारियाँ भी प्राप्त होती हैं। उदाहरण के लिए, अगर आप मुंबई विस्फोटों से जुड़ा लेख पढ़ रहे हैं तो उसमें आपको मुंबई के लोकल ट्रेनों के लेख की कड़ी भी मिल जाएगी। इंटर्विकि से भिन्न भाषाओं के लेख जुड़े होते हैं। हिंदी में महात्मा गांधी के लेख के साथ लगभग 31 और भाषाओ में उस लेख की कड़ी है, किसी और भाषा जैसे की गुजराती मे लिखा गया लेख तुरंत ही पढ़ सकते हैं। विकिपिडीया मे काफ़ी तेज़ी से समसामयिक विषयों के बारे में लेखों का विकास हो सकता है। जैसे कि मुंबई विस्फोटों के ख़बर का ज़ाहिर होने के चंद मिनटों में ही उसके बारे में अंग्रेज़ी विकिपीडिया में प्रासंगिक कड़ियों के साथ लेख मौजूद था।

गूगल और अन्य सर्च इंजनों की खोज करने पर विकिपीडिया के लेख परिणामों में प्रमुखता से उभरते हैं। ज़ाहिर है कि हिंदी विकिपीडिया के विकास से इंटरनेट पर हिंदी का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या में भी वृद्धि होगी। लोगों को हिंदी का प्रयोग करने हेतु एक और मंच मिलेगा। विकिपीडिया एक ऐसा मंच है जो शिकायत का मौका नहीं देता है। बल्कि आपको अपनी ही शिकायत दूर करने का मौका देता है। अगर आपको लगता है कि कोई जानकारी अधूरी है या ग़लत है, तो आप उसमें घटजोड़ या सुधार कर सकते हैं। हिंदी में लगभग हर विषय पर जानकारी की माँग है, जो हम सबको पूरी करनी चाहिए।

★★★

सॉफ्टवेयर परियोजनाएं क्यों असफल होती हैं और उनको सफल बनाने के उपाय

– नितिन कुमार वार्ष्णेय
तकनीकी अधिकारी

1. अपर्याप्त समय

अक्सर देखा गया है की परियोजना (प्रोजेक्ट) के शुरू होने से पहले ही उसकी समय सीमा की तारीख तय कर दी जाती है जोकि अपरक्राम्य (non-negotiable) होती है। परिणामस्वरूप, आप सोचते हैं कि जितनी जल्दी कोडिंग शुरू होगी उतनी ही जल्दी प्रोजेक्ट ख़त्म हो जाएगा।

यह तरीका सही नहीं है। एक अच्छा डिजाइन बनाना महत्वपूर्ण है भले ही इसमें कुछ समय लग जाए। अच्छा डिजाइन न होने के कारण विकास (डेवलपमेंट) के दौरान प्रोजेक्ट में परिवर्तन करने पर समय अधिक लगेगा और बजट में बढ़ोतरी भी होगी।

समाधानः

एक अच्छा डिजाइन बनाने के लिए पर्याप्त समय दें। सीधा कोडिंग शुरू करने की प्रवत्ति को रोकें। कोडिंग के लिए अलग से समय आवंटित करें। इससे परियोजना का बाकी हिस्सा ज्यादा बेहतर चलेगा। जब आप अपने ग्राहकों को कुछ ऐसा देते हैं जो कि ग्राहक की अपेक्षा पूरी करता हो एवं पहली बार सही तरीके से काम करता हो तो ऐसा करने से आपकी प्रतिष्ठा में सुधार होता है।

1. अपर्याप्त बजट

बहुत सी परियोजनाएं सही आवश्यकताओं के आधार पर नहीं बल्कि 'सबसे कम कीमत पर सबसे सफल उम्मीदवार' (lowest price most successful candidate) या कम बजट नीति के आधार पर अपनाई जाती हैं। ऐसी स्थिति में सब कुछ धीमा हो जाता है। संसाधन या तो देरी से उपलब्ध होते हैं या फिर कभी उपलब्ध ही नहीं होते। परियोजना का बजट कम होने पर हर जगह कटौती होने लगती है और गुणवत्ता को भुगतना पड़ता है।

समाधानः

बजट के विषय में यथार्थवादी रहें व यह सुनिश्चित करें कि यह सभी आवश्यकताओं पर आधारित है। सबसे कम बजट दिखा कर परियोजना लेने से बचें, कम कीमत पर ग्राहक को आपूर्ति करने से बचें। आप अपने ग्राहक को गुणवत्ता पूर्ण उत्पाद देने का प्रयास करें। जब भी ग्राहक के पास बजट के सिलसिले में जाएं हमेशा एक अच्छी टीम के साथ जाएं जिसने पहले भी दूसरी परियोजनाओं के बजट का सफल अध्ययन किया हो।

1. बेकार संचार

एक पुरानी कहावत है कि कभी कल्पना मत करो, और यह सॉफ्टवेयर परियोजनाओं के लिए विशेष रूप से संगत है। परियोजना की सफलता के लिए ग्राहक, उपयोगकर्ताओं और विशेष रूप से विकास टीम के साथ अच्छा संचार बहुत महत्वपूर्ण है। हमेशा अपने ग्राहक से बातचीत करते रहें जिससे ये पता चल सके की ग्राहक की जरूरत क्या है और हम उसे देने के लिए बना क्या रहे हैं। अगर ऐसा न हुआ तो कुछ समय बाद पता चलेगा कि हम बना कुछ और रहे हैं, लेकिन ग्राहक को कुछ और चाहिए। उपयोगकर्ताओं, अन्य विभागों व एक दूसरों के साथ अच्छी तरह से संवाद करना बहुत जरूरी है।

समाधानः

संचार व्यवस्था को भंग करने वाले संभावित कारणों की पहचान करें। यह बाद में परियोजना में भ्रम की

स्थिति और जटिलताओं को जन्म दे सकता है। कभी यह न समझें कि हर कोई समझदार है एवं वह अपने आप ही परियोजना की बारीकियों को समझ लेगा। परियोजना के वातावरण को बनाने में उपयुक्त समय लें ताकि परियोजना समय पर, बजट के अन्दर और उपभोक्ता की अपेक्षाओं पर खरी उतरे।

4. परियोजना की प्रगति की कभी समीक्षा न करना

परियोजना की प्रगति में चीजे बदलती हैं और इन बदलावों के कई महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकते हैं। परियोजना के मध्य में ये बदलाव परियोजना की सफलता और असफलता निर्दिष्ट करते हैं। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है की परियोजना की प्रगति पर हम नियमित रूप से ध्यान रखें ताकि जितनी भी नई चुनौतियाँ आने को हों वह परियोजना के शुरूआती समय में ही आ जाएं, जिससे परियोजना पर काम करने वाले सभी व्यक्तियों को परियोजना में होने वाले विलम्ब तथा उत्पाद में होने वाले परिवर्तन की चेतावनी दी जा सके।

समाधानः

परियोजना के दौरान लगातार छोटे–छोटे मील के पत्थर स्थापित करें। जिस से जब आप अपनी टीम के साथ परियोजना की समीक्षा करें तो आप अपने बनाये हुए मील के पत्थरों को देखते हुए परियोजना में आवश्यक समायोजन कर सकें एवं नए मील के पत्थर स्थापित कर सकें। हमेशा अपनी टीम के करीब रहें जिस से आप समझ सके की परियोजना में चल क्या रहा है और आपकी टीम किन चुनोतियों का सामना कर रही है।

5. अपर्याप्त परीक्षण

जब हम पर उपभोक्ता को उत्पाद जल्दी वितरित करने का दबाव होता है तब अक्सर परीक्षण पर प्रभाव पड़ता है एवं सभी परीक्षणों को विकास चक्र के अंत में करने के लिए छोड़ दिया जाता है। परिणामस्वरूप, उत्पाद में अनेक खामियां रह जाती हैं और उपभोक्ता भी नाखुश रहता है।

समाधानः

परियोजना विकास चक्र के दौरान परीक्षण को भी हर घटक (मोड्यूल) के साथ साथ चलना चाहिए। ऐसा करने से हमारे पास केवल परियोजना के सारे घटकों का एकीकरण (इंटीग्रेशन) शेष बचता है क्योंकि हर घटक का परीक्षण तो हम विकास चक्र के साथ–साथ करते आये हैं।

6. उत्पादन वातावरण में परीक्षण

यह वाकई में आश्चर्य की बात है कि कुल कितनी संस्थाएं होंगी जोकि अपने उत्पाद का उत्पादन वातावरण में परीक्षण करती होंगी। यह बहुत ही जोखिम भरी रणनीति है कि आप किसी नए घटक को बिना परीक्षण के उत्पादन में डाल रहे हैं। ऐसा करने से हमेशा यह भय रहता है की कहीं हमारे उत्पादन वातावरण को कोई हानि न पहुँच जाए।

समाधानः

गुणवत्ता आश्वासन और नए सॉफ्टवेयर उत्पादों के विमोचन (रिलीज़) के लिए एक प्रक्रिया का विकास करें। परीक्षण के लिए उत्पादन से अलग एक ऐसा वातावरण प्रदान करें जिसका वातावरण हू बा हू उत्पादन जैसा हो जिस पर सभी नए उत्पादों का परीक्षण हो। जब उत्पाद परीक्षण की कसौटी पर खरा उतरे तभी वह उत्पादन में जाए।

7. गुणवत्ता आश्वासन की कमी

अक्सर सॉफ्टवेयर वितरित करने के लिए जल्दबाजी में, गुणवत्ता कहीं पीछे छूट जाती है। जितने भी कोड में बदलाव होते हैं उनका कही पर, कोई भी दस्तावेज़ नही होता। डिजाइन में दोष हो सकते हैं और कार्यान्वयन (इम्प्लिमेंटेसन) अधूरा हो सकता है। इन सभी उपरोक्त कारणों की वजह से हमें कई बार दोबारा कार्य करना पड़ जाता है, जिससे समय और अधिक लगता है और हमारा ग्राहक और ज्यादा नाखुश रहता है।

समाधानः

उत्पाद जारी करने से पहले गुणवत्ता की जांच करें और सॉफ्टवेयर दस्तावेज़ बनाने के लिए अलग से समय मुक़र्रर करें।

8. उद्योग मानकों के अनुरूप न होना

अपनी सॉफ्टवेयर परियोजनाओं में उद्योग के मानकों का प्रयोग करें। मानकों के अनुरूप सॉफ्टवेर परियोजना विकसित करने से उसकी पोर्टेबिलिटी, प्रयोज्यता, मजबूती सुनिश्चित होती हैं और इससे परियोजना के दौरान तथा भविष्य में समस्याएं कम हो सकती हैं इस तरह के मानकीकरण के लिए अंतराष्ट्रीय संगठन (आईएसओ) और वर्ल्ड वाइड वेब कंसोर्टियम (W3C) ने खुले मानकों (ओपन स्टैण्डर्ड) को विकसित किया है।

समाधानः

मानकों को अपनी परियोजना में परिभाषित करने के लिए प्राथमिकता दें। अपने मानकों की समीक्षा करें और समय–समय पर नियमित रूप से अपने मानकों का परीक्षण करते रहें। अगली बार जब आप कोई नई सॉफ्टवेयर परियोजना शुरू करें तो शुरू करने से पहले आप इस सूची को देखे और नई परियोजना की सफलता में आप अपना पहला कदम रखें।

★★★

मैं अकेला हो गया हूँ

– प्रिया
पी.एस.एस.

रो रहा क्यों व्यर्थ रे मन
कौन अपना है यहां पर
मिट गयी हस्ती बड़ों की
है हमारी क्या यहां पर।
सबको अपनी ही पड़ी है
चल रहे सब भावना में
स्वप्न सब बिखरे पड़े जब
है कहना कुछ कल्पना में।
स्वर्ग–सुख के मोह में आ
नरक में मैं बस गया हूँ
आज जग के जाल में कुछ
बेतरह मैं फंस गया हूँ।
नाव तो मंझधार में फंस
धार की आश्रित हुई है
दूर दोनों तट हुए हैं
और मंजिल खो गयी है।
कौन देगा साथ मेरा
यह प्रबल चिंता सताती
मैं अकेला हो गया हूँ
अब नहीं विश्वास थाती।

धन्य भारतीय संस्कृति

– संजय कुमार
पी.एस.एस.

धन्य भारतीय संस्कृति अपनी,
प्रेम बहुत अधिकार नहीं है।
विकास, भला सबका चाहे जो,
ऐसा दावेदार नहीं हैं।।

छुआछूत का भाव न रखती,
धर्मों का सत्कार यहीं हैं।
ज्ञान भक्ति कर्मों का प्रांगण
मेरा चारों धाम यही है।।

जहाँ गंगा–यमुना सरस्वती
बहती हैं जिसके आंगन में।
तीन ओर सागर लहराता
अडिग हिमालय प्रांगण में।।

जग में ऊँचा रहे तिरंगा,
भारत माँ का मान यही है।
जय–जय भारत देश हमारा,
मेरा जीवन प्राण यही है।।

दूर देश में रहकर भी जो,
राष्ट्र एकता प्रेम नहीं है।
लानत ऐसे जीवन को है
वह सच्चा भारत वीर नहीं है।।

तीन की महानता

– दीपक कुमार आर्य
तकनीकी अधिकारी

तीन को नमस्कार करो – माता, पिता, गुरु।
तीन को याद रखो – भगवान, अहसान, मौत।
तीन से अच्छा सलूक करो – नौकर, गरीब, विधवा।
तीन से मजाक मत करो – अंगहीन, अनाथ, बूढ़ा।
तीन पर काबू रखो – आदतें, जुबान, गुस्सा।
तीन को प्यार करो – न्यायप्रियता, सत्यता, पवित्रता।
तीन का मूल्य समझो – समय, स्वास्थ्य, चरित्र।
तीन चीजों से बचो – निंदा, लोभ, कुसंग।
तीन के लिए मर मिटो – धर्म, देश, मित्र।
तीन के लिए लड़ो – सत्य, स्वतंत्रता, न्याय।
तीन बातें मत भूलो – उपकार, उपदेश, उदारता।
तीन के लिए तैयार रहो – मृत्यु, दुःख, विपत्ति।

★★★

न निराश हो न होने पर

– रानू रत्नावत
परियोजना सहायक

न निराश हो, न होने पर ....
न निराश हो न होने पर, अभी तो मौके बाकी हैं
न जान गवां यू खोने पर
अभी तो सांसे बाकी हैं ....
हो सकता है आज भी अगर मन की लगन सांची है
धर ले एक लक्ष्य तू अभी तो मंजिले बाकी हैं ...
जीतने की उम्मीद से जिंदादिल जीते है .....
क्यूँ हार मानते हो, अभी तो मुकद्दर का फैसला बाकी है ...
चलते–चलते राह में घुटने टेक गिर न जाना,
सर उठा कर देख, अभी तो सरहदें बाकी हैं ....

नाकामी की दोराहत बस इतना दर्शाती है ....
सफल सिंहासन के लिए अभी कोशिशें बाकी हैं .....
जीवन के इस पतझड़ से न भाग तू घबराकर
जान ले तू इतना खूबसूरत मौसम बाकी है ......

खोया तो क्या खोया, अभी तो जीना शुरू किया है .....
पाया तो क्या पाया, अभी तो खुदा बाकी है ......

★★★

धैर्य एक कड़वे पौधे की तरह होता है लेकिन इससे मिलने वाला फल बहुत मीठा होता है।

महिमना पार

– प्रीति राजदान
संयुक्त निदेशक

महिमना पार या शिव महिमना स्रोत एक महत्वपूर्ण शिव प्रार्थना है। कश्मीरी घरों में शिवरात्रि पर्व पर यह प्रार्थना जरूर गायी जाती है। इस शक्तिशाली स्रोत के पीछे की असली कहानी हम में से ज्यादातर लोग नहीं जानते हैं।

पुष्पदन्त एक गंधर्व थे जो इंद्र के महल में संगीतकार थे। पुष्पदन्त का अर्थ है फूलों के दांत वाला या फिर फूलों के प्रति स्वाद रखने वाला।

अपने इस फूलों के जुनून के कारण पुष्पदन्त काशी के राजा चित्ररथ के सुन्दर बगीचे में से फूल चुराने लगे। उनकी चोरी रोज की घटना बन गई। राजा चित्ररथ जो एक शिव भक्त थे अपनी रोज़ की प्रार्थना करने में असमर्थ होने लगे। पुष्पदन्त अपनी दिव्य शक्तियों के रहते अदृष्य हो कर चोरी करते थे। सभी प्रयासों के बाद भी राजा चित्ररथ चोर को पकड़ने में असमर्थ हो गए। चोर को न पकड़ पाने पर राजा चित्ररथ दुखी रहने लगे।

एक अंतिम उपाय के रूप में राजा ने बगीचे में पवित्र बेल के पत्ते (बेलपत्र) बिछवा दिए। पुष्पदत्त ने अनजाने में पत्तियों पर पैर रखा और शिव के क्रोध को आमंत्रित किया। शिव ने पुष्पदन्त को शाप देते हुए उनकी सारी दिव्य शक्तियों को छीन लिया।

अब पुष्पदत्त को अपनी भूल का अहसास हुआ और अपने कुकर्म पर पछतावा हुआ। अपने पश्चातापी रूप में पुष्पदत्त ने एक मधुर और लयबद्ध प्रार्थना – शिव महिमना पार की रचना की।इस प्रार्थना से प्रसन्न होकर शिवजी ने पुष्पदत्त को माफ कर दिया और उसकी सारी दिव्य शक्तियां लौटा दी।

फूलों की एक मामूली चोरी के लिए पुष्पदत्त को क्रोधित शिवजी को मनाने के लिए इतना यत्न और पश्चाताप करना पड़ा। सोच कर देखिए रोजाना मनुष्य द्वारा किए गए घोर पापों पर कितने क्रोधित होते होंगे भगवान।

शिव महिमा से एक छन्द–

असित गिरि समं स्यात् कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुर–तरूवर शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव
गुणानामीश पारं न यति।।

यदि एक नीले पहाड़, समुद्र, दिव्य पेड़ और पृथ्वी को स्याही का रंग, दवात, कलम और कागज मान लें और माता सरस्वती स्वयं लिखे फिर भी, वह आपकी महानता का वर्णन करने में सक्षम नहीं होगी।

यह देश है हमारा

– रामजी गुप्ता
परियोजना अभियंता-II

यह देश है हमारा ....
सत्ता की खुमारी में, आजादी सो रही है
हड़ताल क्यों हैं इसकी जांच हो रही है
चोरी व घूसखोरी के घर नोट बरसते हैं
ईमान के मुसाफिर दाने दाने को तरसते हैं
यह देश है हमारा ....

वोटर से वोट लेकर वे कर जाते हैं किनारा
बातें नक्सली की करते, पर सोचा नही क्यों हमें बनाया,
जब तक इनकी अंतरात्मा में है गन्दा खून,
तब तक ये राष्ट्रीय संपत्ति पर डालेंगे धूल।
यह देश है हमारा ....

फिल्मों पर फिदा लड़के, फैशन पर जिंदा लड़की,
मजबूर मम्मी–पापा की पॉकेट पर भारी कड़की
इनकम बहुत ही कम है अब होता नहीं गुजारा
फिर भी यह देश है हमारा ....

सरकारी दफ्तर से जो सही परिवर्तन की लहर उठेगी
भ्रष्टाचारी नेता के हारने से जो परिवर्तित होगी आम आदमी की जिंदगी
तब रोजगार होगा, संसाधनों से भरा संसार होगा
हँसी–खुशी हर इंसान होगा, तब यह देश हमारा होगा।

★★★

देश को एकता के सूत्र में आबद्ध करने की शक्ति केवल हिन्दी में है।
इंदिरा गांधी

भूखण्ड में आई बाढ़ – प्राकृतिक आपदा या प्रकृति का जवाब बढ़ते मानव हस्तक्षेप को

– नेहा शर्मा
तकनीकी अधिकारी

उत्तराखण्ड में आई बाढ़, भारत के लिए चेतावनी है कि भारत को अपनी प्राकृतिक संपदा को बचाने के लिए कदम उठाने ही पड़ेंगे। भूकंप और बाढ़ हर साल आते ही हैं। कोई न कोई शहर या गांव बाढ़ ग्रसित या भूकंप के झटके को सहन कर ही रहा होता है। समय–समय पर इन मसलों को लेकर बहुत चर्चा होती है पर फिर समय के साथ सब शांत हो जाता है, सरकार अपनी दोष प्रकृति के माथे मढ़ देती है।

इस बार भी कुछ ऐसा ही हुआ है। उत्तराखण्ड बाढ़ ग्रसित है, 5000 से ज्यादा लोगों के मारे जाने की आशंका है। भारतीय सेना ने हजारों की तादाद में लोगों को बचाया है, पर सवाल यह उठता है कि क्या ये प्राकृतिक आपदा है या फिर मानव हस्तक्षेप इस आपदा के लिए जिम्मेदार है? चार धाम के क्षेत्र में जिसमें केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री व यमुनोत्री आते हैं, जो कि बाढ़ तथा भूकंप का बहुत संवेदनशील क्षेत्र है, कुल मिला कर 70 बांध हैं। बांधों, सड़कों तथा होटलों इत्यादि को बनाने के लिए चट्टानों को तोड़ना पड़ता है, परन्तु सरकार को लगता है कि बांध बनाना, सड़कें, होटल इत्यादि बनाना ही यात्रियों को आकर्षित करने के उपाय है। होटल बनाने के लिए वनों को काटा जा रहा है जो कि पर्यावरण के संतुलन को और बिगाड़ रहा है। 18 दिसम्बर, 2012 को पर्यावरण मंत्रालय ने नदियों के आस–पास का 135 कि.मी. का क्षेत्र इको–सैंसिटिव जोन बना दिया था, जिससे कि कोई भी होटल इत्यादि वहां न बन सके, पर उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से मिलकर इस आदेश को खारिज कर दिया क्योंकि उनके मुताबिक इससे स्थानीय लोगों की रोजी–रोटी पर फर्क पड़ेगा।

और तो और गंदे नाले नदियों में मिल कर पानी के स्तर को और बढ़ा देतें है जिससे बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है। मशीनों द्वारा गैर–कानूनी उत्खनन भी एक कारण है बढ़ते खतरे का।

इस सबको रोकने के लिए कई बार पर्यावरण एक्टिविस्टस ने धरने दिए हैं, अनशन किए हैं, पर सरकार सिर्फ अपने फायदे की सोचती है और सब कुछ प्रकृति पर टाल देती है। सोचनें की बात ये है कि क्या वाकई में इतने बांधों की जरूरत है? हर साल चार धाम की यात्रा के लिए लाखों की तादाद में तीर्थयात्री आते हैं, क्या कुछ ऐसा कदम नहीं उठाया जा सकता जिससे तीर्थयात्रियों की संख्या पर काबू पाया जा सके, जिससे प्रकृति के साथ संतुलन बना रह सके?

ऐसे कदम उठाने की जरूरत है जिससे मानव तथा पर्यावरण के बीच का तालमेल बना रहे, तथा ऐसी आपदाओं से बचा जा सकता है।

★★★

वट वृक्ष

– अभिषेक शर्मा
परियोजना अभियंता-I

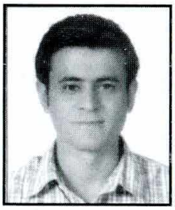

एक था वट वृक्ष।
जमीन में पाताल तक फैला,
आसमान में अंतरिक्ष को छूता
अपनी जमीन में मजबूती से धंसा
असंख्य शाखों से भरपूर।

न जाने कितने परिंदों का बसेरा था उस पर
सूर्य ने अनगिनत प्रातः को बिखेरा था उस पर
आसमान से निकली जड़ें फिर आ जमीं थी, ज़मीन में,
बस वट वृक्ष क्या था कुनबा था एक, संपूर्ण
जीवन, प्रेम, एकता, भाईचारे से परिपूर्ण।

न जाने कितने खेल खेले हमने शाखों पर उसकी,

वह केवल वट वृक्ष नहीं था–
था प्रतीक हमारे अस्तित्व का,
एक संस्कृति का।

आज वह वट वृक्ष ढह गया–
नियति ने कर दिया उसे–
जीवन विहीन।

किन्तु–
उसकी शाखों से फूटे अनेक अंकुर,
जमें हैं जमीन में – बनने को एक नया वट वृक्ष।।

★★★

दिव्य घंटी (डिवाईन बैल)

– राजेन्द्र सिंह
परियोजना अधिकारी

सर्वशक्तिमान का हमें मानव जीवन देने का शायद तात्पर्य यह रहा होगा कि हम अपने जीवन के साथ–साथ प्रकृति एवं इसके अन्य जीव जन्तुओं की रक्षा भी कर सकें। आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति करना इस जीवन का श्रेष्ठतम लक्ष्य रहा होगा। हम अज्ञानवश मोह माया में इतने लीन हो जाते हैं कि सर्वशक्तिमान एवं मानव जीवन के तात्पर्य को भूल जाते हैं। हम सोचने लग जाते हैं कि यह संसार जैसे हमारा ही है। हम अकड़ के चलना शुरू कर देते हैं, घमंडी हो जाते हैं एवं यह भूल जाते हैं कि यह जीवन क्षणभंगुर है, एवं मृत्यु ही अन्तिम सत्य है। हम खुद अपने लोगों को अपने कन्धों पर शमसान तक छोड़ के आते हैं, कुछ समय तक सत्यता से रूबरू भी होते हैं, लेकिन पुनः वही अकड़, वही अज्ञानता हमारा पीछा करने लग जाते हैं। हम सोचने लग जाते हैं कि वह मर गया तो क्या हुआ हम तो अभी हैं ही।

उपरोक्त अज्ञानता की राह चलते चलते हमारे जीवन में दिव्य घंटियाँ बजनी शुरू हो जाती हैं। हम इन घंटियों का मतलब भी नहीं समझते हैं।

- **प्रथम घंटी** तब बजती है जब हमारे बाल सफेद होने लग जाते हैं। हमें संकेत मिलता है कि हमने अज्ञानता में काफी समय व्यतीत कर लिया है एवं अब सचेत होकर हमें आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होना चाहिए। हम इस संकेत को समझने के बजाय बाल काले करवाना शुरू कर देते हैं। **कृत्रिम लेकिन पहले से ज्यादा काले, घने एवं अच्छे बाल।**
- **दूसरी घंटी** तब बजती है जब हमारी आँखें कमजोर होनी शुरू हो जाती हैं। यह इस बात का संकेत होता है कि हमने बाहर की दुनियां काफी देख ली एवं अब अपने अन्दर की ओर देखना शुरू करने की जरूरत है ताकि हम आध्यात्मिकता की ओर चलकर मानव जीवन को सफल बना सकें। हम इस संकेत को भी अनदेखा करके आयातित महंगा एवं शौकीन मिज़ाज़ चश्मा चढ़ा लेते हैं। अब तो क्या कहना। सब कुछ पहले से भी साफ दिखाई देने लगता है।

इसके समर्थन में मुझे एक काल्पनिक लेकिन सार्थक एवं प्रभावी कहानी याद आती है। इंसान के पूर्ण निर्माण के पश्चात ही भगवान को अपनी गलती का अहसास हुआ कि बहुत बडी गलती हो गई। उसने एक ऐसे प्राणी की रचना कर दी जो उसे भी नहीं छोड़ेगा। भगवान ने सारे ब्रहमाण्ड में ऐसी जगह तलाशने की कोशिश की जहां वह खुद तो छुपा सके लेकिन वह जगह इंसान रूपी राक्षस की पहुंच से बाहर हो। सारी जगह तलाशने के पश्चात यह ज्ञात हुआ कि कोई भी जगह इंसान की पहुंच से बाहर नहीं है। भगवान जहां भी छिपेंगे इंसान वहीं उनका जीना हराम कर देगा। कई गोष्ठियों एवं परामर्शों के पश्चात भगवान द्वारा यह निर्णय लिया गया कि इंसान के भीतर छिपना ही उचित रहेगा। इंसान के व्यवहार को देखकर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह किसी भी दुर्गम जगह पर तो पहुंच जाएगा लेकिन अपने खुद के अन्दर झांकने की कोशिश तक नहीं करेगा।

तीसरी घंटी तब बजती है जब हमारे दांत भी हमारा साथ छोड़ने लगते हैं। दांतों का कमजोर होना इस बात की तरफ इशारा करता है कि हमने जाने अनजाने सभी प्रकार के मांसाहारी एवं शाकाहारी व्यंजनों का स्वाद ले लिया है। अब हमें सादा एवं सात्विक व्यंजन लेना शुरू करके आध्यात्मिकता प्राप्ति की ओर बढ़ना चाहिए।

हम इस संकेत को भी अनदेखा कर देते हैं। नामी दंत चिकित्सक के पास जाकर नए दांत पहनने में ही समझदारी समझते हैं। नए दांत तो मूल दांतो से ज्यादा नुकीले एवं चमकदार।

• काले बाल, नजर का आयातित चश्मा, एवं नुकीले एवं चमकदार सफेद दांतों के साथ हमारी अकड़ इतनी पक्की कि हमारा खुद का व्यक्तित्व उस अकड़ के सामने फीका पड़ जाता है। तब एक और चौथी लेकिन आंखिरी घंटी बजती है और हमारी कमर टेढ़ी हो जाती है। अब हम आगे की ओर झुक जाते हैं। तब जाकर कहीं समझ में आती है कि **अगर झुकना ही था तो पहले ही झुक गये होते। लेकिन दुर्भाग्यवश तब तक बहुत देर हो जाती है।**

घंटियां बजने से पहले ही जीवन के महत्व एवं परमपिता के उद्देश्य को समझते हुए आध्यात्मिक जीवन जीने में ही समझदारी है। गृहस्थ जीवन जीने के साथ–साथ आध्यात्मिक जीवन संभव है। आवश्यकता है तो थोड़े से प्रयास की।

मैं पुनः एक काल्पनिक कहानी के साथ ही इस लेख का समापन करना चाहुंगा जो कि हमारे अनायास मोह माया से सम्बन्धित हैः

पचास वर्षीय एक व्यक्ति के पास यमराज आकर पूछते हैं कि आपकी आयु 50 वर्ष हो गई है इसलिए भगवान ने आपको बुलावा भेजा है। अगर आप हमारे साथ चलते हो तो पूरी संभावना है कि आपको स्वर्ग की प्राप्ति हो। उस मनुष्य ने जबाब दिया कि ''अभी तो गृहस्थी की अवस्था समाप्त ही हुई है अब बच्चे बड़े हो गए हैं एवं शायद कष्ट के दिन भी अब समाप्त हो गए हैं। बस थोड़े आराम के दिन और जी लूं फिर चलूंगा''।

कुछ समय पश्चात जब यमराज पुनः आते हैं तो देखते हैं कि वही व्यक्ति अपने ही घर में बैल के रूप में है। फिर वही सवाल पूछते हैं। वह व्यक्ति कहता है कि ''अभी बस खरीफ की फसल तैयार है और रबी की फसल हेतु बीजारोपण का काम हो जाय फिर चलूंगा आपके साथ''।

कुछ समय पश्चात जब यमराज फिर से आते हैं तो देखते हैं कि उस व्यक्ति ने अब अपने घर में कुत्ते का रूप ले लिया है। स्वर्ग की ओर प्रस्थान के सवाल पर फिर वही जवाब ''बस मेरे बेटे बहु तो काम पर चले जाते हैं एवं मेरे पोते पोतियों को नौकर के भरोसे छोड़ जाते हैं। नौकरों का क्या विश्वास। बस पोते पोती कुछ बड़े हो जाएं फिर चलूंगा''।

स्वाभाविक था कि यमराज कुछ समय के बाद फिर से आते हैं तो देखते हैं कि वह व्यक्ति बच्चों की अनुपस्थिति में अपने बच्चों की तिजोरी में सांप का रूप लेकर बैठा रहता है और उनके आते ही तिजोरी छोड़ देता है। पूछने पर वही अपेक्षित जबाब ''बस बच्चों ने मेहनत से कुछ कमाई की है और मैं नहीं चाहता हूं कोई चोर उनकी तिजोरी पर हाथ साफ कर ले। बस कुछ दिन और उस तिजोरी की रखवाली कर लूं फिर चलूंगा''। इस पर यमराज ने हल्ला बोल दिया ''सांप सांप सांप''। उसके खुद के बच्चे आकर सांप को मारने लगे तो बच्चों को यमराज ने सारी कहानी सुनाई। बच्चों को कहां सुननी थी। उन्होंने सांप पर लाठी बजानी शुरू कर दी। तब भगवान ने आकर समझाया मोह माया में पड़े रहने के दुष्परिणाम।

★★★

नेत्रदान – सामाजिक दायित्व

– चिन्मय गर्ग
तकनीकी अधिकारी

एक सौ दस करोड़ की आबादी में एक करोड़ बीस लाख से अधिक व्यक्ति जहां नेत्रहीन हैं, विश्व के 20 प्रतिशत से अधिक व्यक्ति जहां नेत्र–अंधता से पीड़ित हैं, तीस लाख से अधिक व्यक्ति ऐसी अंधता से पीड़ित हैं जिसका हम सहजता से निवारण कर सकते हैं– वह देश है भारत। एक तरफ ये दानवीर कर्ण, दधीचि, बलि और न जाने कितने बड़े–बड़े दानवीर इस दानवीरों की पृथ्वी पर बसे हैं, फिर भी इस नेत्रांधता के कलंक का निवारण नहीं कर पा रहे हैं। लेकिन हम इस कलंक को दूर कर सकते हैं– मृत्यु उपरांत नेत्रदान करके। हमारे छोटे से पड़ोसी देश श्रीलंका में एक भी इस प्रकार का नेत्रहीन नहीं है, क्योंकि वहां दुनियां के सबसे ज्यादा नेत्रदानकर्ता हैं। प्रत्येक व्यक्ति नेत्रदान करता है। उन्होंने अपने देश की आवश्यकता तो पूरी कर ही ली, दुनियां के देशों को भी नेत्रदान करते हैं।

नेत्रदान का तात्पर्य हैं, नेत्र को सामने से देखने पर जो गोल काली झिल्ली दिखाई देती है उसका दान करना। इस झिल्ली की खराबी से पीड़ित तीस लाख नेत्रांध भारत में हैं। यदि भारत में मरने वाला प्रत्येक व्यक्ति मृत्युपरांत अपने दोनों नेत्रों की झिल्ली (Cornea) का दान कर दे तो यह कलंक एक वर्ष में मिट सकता है।

भारत में प्रतिवर्ष दस हजार व्यक्ति नेत्रदान करते हैं। भारत के सभी मेडिकल कॉलेजों के नेत्ररोग विभागों में नेत्र बैंक (Eye Bank) की सुविधा उपलब्ध है। नेत्रदान करने वाले व्यक्ति को सपरिवार नेत्रदान का संकल्प पत्र भरकर देने से किसी सदस्य की मृत्यु होने पर शोक के समय दूसरे सदस्य द्वारा नेत्रदान हेतु पास के किसी भी नेत्र बैंक को सूचना देने से सामान्यतः निधन के छः घण्टे के अन्दर नेत्रबैंक की चिकित्सक टीम नेत्र की झिल्ली (Cornea) को प्राप्त कर लेती है। एक व्यक्ति की झिल्ली (Cornea) दो व्यक्तियों को लगा दी जाती है। इस प्रकार, एक व्यक्ति अपनी मृत्यु के बाद दो नेत्रहीनों की जिन्दगी रोशन कर देता है और एक तरह से नेत्रहीनता की नारकीय जिंदगी जीने वाले को जीवन दान देता है।

जो शरीर निधन के बाद राख / खाक़ (मिट्टी) में मिलना हैं – क्यों न यह दान कर व्यक्ति स्वयं और उसका परिवार नेत्र प्राप्तकर्ता व्यक्ति और उसके परिवार की दुआयें आजीवन प्राप्त करे। बिना खर्च, बिना दर्द – ऐसा दान और कहां। हम स्वयं परिवार सहित, इष्टमित्रों सहित इस महादान के बारे में जागरूकता फैलाएं और खाक़ में मिलने से पहले ही नेत्रों का दान करके, दो नेत्रहीन व्यक्तियों के जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का पुण्यकार्य करें जिसे हम सहजता से कर सकते हैं।

इस संबंध में एक कवि की पंक्ति ही पर्याप्त है:

एक बार करवट तो बदलें,
सारा जग जयकार करेगा।।

सभी धर्मों में दान का महत्व है। इस जन्म में किए दान का अगले जन्म में कई गुणा मिलना और अनेक संकटों से बचना सर्वविदित है। अतः क्यों न हम आगे बढ़ें– और नेत्रदान कार्यक्रम को बढ़ाएं।

कंप्यूटर पर काम करने वालों को सलाह

– अनिल कुमार
सचिव

कंप्यूटर के सामने ज्यादा वक्त गुजारने वाले अक्सर सिर दर्द, आंखों में जलन, धुंधला देखने, रंगों को पहचानने में परेशानी आने की शिकायत करते हैं। ये परेशानियां कंप्यूटर स्ट्रेन के लक्षण हो सकते हैं। इससे आगे चलकर आंखों की बीमारी, ग्लूकोमा, कमजोरी, काम करने की क्षमता में कमी आना और दिमाग की नसों को नुकसान पहुंचने का खतरा हो जाता है। इस मर्ज के शिकार लोगों को कंधे, पीठ, कलाई, हाथों और गर्दन में भी दर्द होता है। लेकिन कंप्यूटर के सामने बैठने के तरीके में बदलाव लाकर, व्यायाम, एंटी ग्लेयर स्क्रीन, आँखों के व्यायाम, विटामिन–ए युक्त आहार और स्ट्रेस हटाने वाले लेंस पहन कर इस बीमारी से निजात पाई जा सकती है।

कंप्यूटर स्क्रीन आपकी आंखों से 20 डिग्री पर हो। बैठने के दौरान पीठ सीधी रहे। कुर्सी की ऊँचाई सामान्य रखें। कंप्यूटर इस्तेमाल करने से पहले स्क्रीन की ब्राइटनेस और कंट्रास्ट अपने हिसाब से सेट करें। ध्यान रहे कि कंप्यूटर पर नजर आने वाले अक्षर की चमक इसकी पृष्ठभूमि से दस गुना ज्यादा हो। कंप्यूटर ऐसी जगह रखा हो जहाँ पर्याप्त रोशनी हो। इससे आँखों पर ज्यादा जोर नहीं पड़ेगा। स्क्रीन रोज साफ करें। कंप्यूटर के सामने लगातार बैठे रहने से बचें। यदि ज्यादा देर तक बैठना ही पड़ जाए तो बीच में ब्रेक लें। आँखों का व्यायाम शुरू करें। हाइड्रोथेरेपी भी फायदेमंद है। एक कटोरे में गर्म और दूसरे में ठंडा पानी लें। एक छोटे तौलिये की मदद से ठंडे और गर्म पानी को बारी–बारी अपनी बंद आंखों पर 30 सेकेंड तक रखें। कुछ देर करें। दर्द से बचने के लिए गर्दन को घुमाने वाला व्यायाम करें।

***

अपने विचारों की अभिव्यक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यह साहित्य की किसी भी विधा, अर्थात् कहानी, कविता, लेख अथवा व्यंग्य द्वारा अपने भावों व मनोभावों को प्रकट करके की जा सकती है और हमारी हिन्दी सभी किस्म की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है तथा इसके अपनत्व को अनुभव किया जा सकता है।

रोजमर्रा के काम आने वाली कुछ उपयोगी बातें

– भुबन दास
पी.एस.एस.

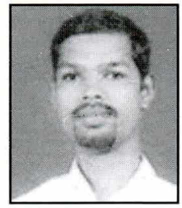

हम सबको घर में कभी न कभी खाना जरुर बनाना पड़ता है। यह किसी का शौक है तो किसी को मजबूरी। पर कई बार काम को सलीके से करने से काम और भी मजेदार और आकर्षक हो सकता है। ऐसे ही कुछ टिप्स नीचे दिये गये है।

- दही जल्दी जमाना हो तो दूध को हल्का गर्म कर लें। उसमें एक टी स्पून दही मिक्स कर ढक्कन बंद कर दें। अब इस पॉट को प्रेशर कुकर में रख कर उसे भी ढंक दें। दही जल्दी जमेगी। यह टिप सर्दी और बारिश के दिनों में कारगर साबित होती है।
- ताजा हरा धनिया बाजार से खरीदकर घर लाते ही उसकी जड़ काट दें। फिर इसे फ्रिज में रखें। यह पंद्रह दिनों तक फ्रेश रहेगा।
- करी पत्ते को गर्म तेल में तल कर उसका तेल निथार लें। अब इस पत्ते को एयरटाइट जार में रखें। जब भी इस्तेमाल करना हो इसे क्रश करें और सब्जी में डालें।
- पुराने आलुओं को स्वादिष्ट बनाने के लिए इनको उबालते वक्त इनमें थोड़ा–सा नींबू का रस और थोड़ी–सी चीनी डाल दें। इससे आलू सफेद व चटपटे बनेंगे। खाने में इसका स्वाद निराला ही लगेगा।
- यदि मलाई में एक चम्मच शक्कर डालकर फेंटा जाए तो मक्खन ज्यादा मात्रा में निकलता है।
- मटर का हरा रंग बरकरार रखने के लिए पानी में एक चम्मच शक्कर डालकर मटर को उबाल लें। इसके पश्चात उबले हुए पानी और मटर को ग्रेवी में डाल दें।
- चाय उबल जाने पर उसमें संतरें का सूखा पावडर डालें। चाय की खुशबू से मूड फ्रेश हो जाएगा।
- यदि एल्युमिनियम का बर्तन जल गया हो तो उसमें प्याज उबालकर साफ करें। बर्तन आसानी से साफ हो जाएगा।
- नींबू या संतरे के छिलकों को फेंके नहीं, धूप में सूखाकर बारीक पीस लें। इस चूर्ण से कुल्ला करने से मुंह साफ होता है।
- तुरई–गिलकी को गीले कपड़े में लपेटकर या पॉलीथिन में रखें ताजा रहेगी।. काटते समय बैंगन काले न पड़ें, इसके लिए उसको नमक व सोडा मिले पानी में डालें।
- नारियल का छिलका आराम से निकालने के लिए छिलका निकालने से पहले उसे आधे घंटे तक पानी में डालकर रखें।

★★★

सुकून

– कविन्द्र सिंह बोरा
सहायक

मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।
ना तेरे दर्द में और ना ही तेरी खुशी में,
ना तेरे चुप में और ना ही तेरी चीख में,
ना तेरे एकान्त में और ना ही भीड़ में,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

ना जन्म में और ना ही मृत्यु में,
ना बचपन में और ना ही बुढ़ापे में,
ना ही खेल में और ना ही इनाम में,
ना मेहनत में और ना ही आलस में,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

ना बूंदों में और ना ही बारिशों में,
ना नदियों में और ना ही समुद्रों में,
ना पहाड़ों में और ना ही मैदानों में,
ना आकाश में और ना ही ब्रह्मांड में,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

ना आग में और ना ही पानी में,
ना पत्थरों में और ना ही धरती की मिट्टी में,
ना फल में और ना ही फूलों–पत्तियों में,
ना जंगलों में और ना ही निर्जनों में,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

ना वक्त के घण्टों में और ना ही मिनटों में,
ना सालों में और ना ही दिनों में,
ना मनुष्य की पल–पल की सांसों में और ना ही धड़कनों में,
ना रात के पहर में और ना ही दिन के पहर में,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

ना मंदिरों में और ना ही मस्जिदों में,
ना आकार में और ना ही निराकार में,
ना रास्तों में और ना ही किसी धर्मों में,
मैं तो बस तेरी आत्मा में हूँ ना यहां हूँ ना वहां हूँ,
मुझको हर जगह क्यों ढूंढता है रे मन बावरे।

मेरा इश्क

– निशा सिंह
एम. टैक (आई.टी.)

वो इन्सान ही क्या जो अपने देश पे ना मिटे
वो दिल ही क्या जिसकी धड़कन में तिरंगा ना धड़के

दिल में है बसा तिरंगा
तुझपे जान निसार है
देख के तुझको ये सांसें गुलजार हैं।

अचल, अडिग खड़ा तू पथ पर
देता हौसला इरादों को है
तुझपे है नजर यों टिकी
करती नित–नित सलाम ये तुझे है
लुटा दूं अपनी जान ये तुझपे
तो ये जीवन बहार है

मेरी जान तिरंगा मेरी शान तिरंगा
मेरी हर धड़कन का है नाम तिरंगा।

बढ़ते अपराध – घटते मानव मूल्य

– गौरव गोत्रा
तकनीकी अधिकारी

अखबार के पन्ने पलटते हुए सहसा नजर एक खबर पर पड़ी, खबर कुछ यों थी– एक घर के बाहर तीन महिलाएं आईं और पानी पिलाने को कहा। मकान मालकिन अकेली थी और जब पानी लेने अंदर गयी तो एक महिला ने शीशी खोलकर रूमाल में नशीला पदार्थ डाल दिया। जब मकान मालकिन पानी लेकर बाहर आई तो उसे रूमाल सुंघा दिया। वह बेहोश होकर गिर गयी और फिर वे तीनों महिलायें घर से कुछ जेवर और रुपये लेकर फरार हो गयी।

अब प्रश्न ये उठता है कि आगे से जब भी कोई उस घर के सामने आकर पानी पिलाने को कहेगा तो क्या वह महिला पानी पिलाएगी? भले ही कोई भला इंसान जो ज्यादा प्यासा हो तो भी उसे शायद प्यासा ही वहां से जाना पड़े और वह महिला ही क्यों जो भी इस खबर को पढेगा या इसके बारे में सुनेगा वह भी आगे से सर्तक हो जाएगा। मेरे घर में भी आज तक जब भी कोई घर के बाहर पानी पिलाने को कहता था तब तक बिना किसी संदेह और डर के हमेशा पानी पिला दिया जाता था पर इस खबर का असर शायद आने वाले दिनो में दिखें।

लिफ्ट लेने के बहाने गाड़ी रूकवाकर लूट और हत्या की घटनाएं भी हमने सुनी हैं और इसका असर यह है कि अब कोई मुसीबत का मारा घंटो हाथ हिलाता रहे पर कोई गाड़ी उसकी मदद के लिए नहीं रुकती।

हमारे पड़ोस में एक आंटी रहती थी। एक बार उसका भाई उनके घर रूका था और वह अपनी बहन की ज्वेलरी लेकर फरार हो गया। मतलब अब रिश्तों पर भी आसानी से भरोसा नहीं किया जा सकता और किसी रिश्तेदार को घर पे ठहराने से पहले भी शायद सोचना पड़े।

चाइल्ड रेप के ज्यादातर मामलों में नजदीकी पहचान वाले ही दोषी पाये जाते हैं। ऐसे में किस पर भरोसा किया जाये?

सड़क पर दुर्घटना होती है पर लोग आंख बंद करके निकल जाते हैं। कोई किसी की मदद करता भी है तो पुलिस और राजनीति के चक्कर में ऐसा फंसता है कि आगे से मदद करने लायक नहीं बचता।

इन सब घटनाओं की वजह से मुझे एक ऐसा समाज दिखाई पड़ रहा है जहाँ कोई किसी की मदद या तो करता ही नहीं या करने से पहले हजार बार सोचता है क्योंकि उसे डर है कि सामने वाला इंसान कहीं उसे ही न ठग ले। जहां लोगों के सामने कोई भी अवांछनीय घटना हो रही है पर सब आँखों पर पट्टी बाँधे हुए हैं। जहाँ कोई चीख कर मदद के लिए पुकार रहा है पर जिन कानों पर वही चीख पड़ती है वे सब कान बहरे हैं। जहाँ लोगों के बीच असुरक्षा और अविश्वास बढ़ता जा रहा है। जहाँ लोगों में स्वार्थ इस कदर बढ़ गया है कि पैसों से बड़ा न ही कोई रिश्ता बचा है ना ही कोई नैतिक मूल्य।

किस दिशा में बढ़ रहे हैं हम? क्या यही हमारी मंजिल है? ऐसे कई प्रश्न मेरे दिमाग में उठ रहे थे तभी एक दोस्त ने एक कहानी याद दिलाई।

एक बार एक साधु एक बिच्छु को पानी में डूबते हुए देखता है और उसे बचाने की कोशिश करता है पर बिच्छु उसे डंक मार देता है। ऐसा 3–4 बार होता है। एक राहगीर जो वहां से गुजर रहा होता है वह साधु से पूछता है आप क्यों इसे बचा रहे हैं जबकि यह आपको डंक मार रहा है। साधु बोलता है यह बिच्छु की प्रवृति है कि वह डंक मारे और यह मेरी प्रवृति है कि मैं इसे बचाऊँ। मै अपने धर्म से पीछे कैसे हट सकता हूँ।

आज के समय यह कहानी कितनी प्रासंगिक है यह तो नहीं कह सकते पर हाँ सतर्क रहकर भी हम अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं।

★★★

वन्देमातरम् का महत्व तथा अर्थ

– दीपक कुमार आर्य
तकनीकी अधिकारी

वन्देमातरम् यह राष्ट्रीयगीत बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित बंगाली उपन्यास आनंद मठ से लिया गया है। सर्वप्रथम यह गीत सन् 1896 में आज़ादी के प्रेरणा स्रोत के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया है। आचार्य रविन्द्र नाथ ठाकुर ने इसे स्वरबद्ध किया। इस गीत को राष्ट्रीय गान के समकक्ष माना जाता है। इसलिये इसे आदर पूर्वक दिल से गाकर हमें अपनी देश भक्ति का परिचय देना चाहिए। इस गीत में मातृभूमि की वंदना की गयी है।

इस गीत का सरल अर्थ इस प्रकार है। हम अपनी उस मातृभूमि की वंदना करते हैं। जिसके फल सुंदर हैं तथा जिसका जल स्वच्छ और निर्मल है। मल्य पर्वत से चलने वाली सुगंधित शीतल हवा से रातें स्वच्छ, छिटकी हुए चांदनी से हँसती हुई प्रसन्न दिखाई देती हैं। जहाँ के पेड़–पौधे पूर्ण रूप से खिले हुए फूलों और फलों से लदकर शोभायमान होते हैं। ऐसी सुन्दर मुस्कान वाली, मीठे बोल बोलने वाली तथा हर प्रकार का सुख और वांछित वरदान देने वाली अपनी मातृभूमि को हम कोटि–कोटि नमन करते हैं।

★★★

हिन्दी एक जीवंत भाषा है। इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है।
के. आर. नारायणन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति

जिन्दगी

– विजयदीप सिन्हा
एम.डैक.(सी.एस.ई.)

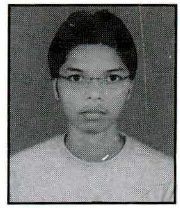

जिन्दगी तकलीफों से लड़ने का ही नाम है
इसके हर पल में छुपा एक पैगाम है
सामना करो डट के इस मुश्किलों भरे खेल का
चुनौतियों को लाँघ आना ही तो जीने का नाम है।
जिन्दगी तकलीफों से लड़ने का ही नाम है

इसमें हर किसी का होता रोज कोई इम्तिहान है
कभी कांटों सी चुभन तो कभी फूलों सा आराम है
मायूस ना हो खुद से बस यही एक समाधान है
मुश्किल चढ़ाई के बाद ही तो सुकून देती फिर ढलान है
जिन्दगी तकलीफों से लड़ने का ही नाम है।

थपेड़े पाकर ही आती मिट्टी में जान है
तपती धूप के बाद ही तो होती सुहानी शाम है
ये सीख देने का इसका अपना ही अंदाज है
परिपक्व सबको करना ही इसका छुपा राज है
नौका बैठकर सागर लांध जाते हैं सब
तैर जो लहरों को चीर आगे होता उसका नाम है
जिन्दगी तकलीफों से लड़ने का ही नाम है।

★★★

आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।
गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर

सुख–दुख जीवन के अंग

– रामजी गुप्ता
परियोजना अभियंता-II

माता के गर्भ में आते ही शिशु पारिवारिक संपत्ति का भागीदर बन जाता है। संभवतः यही स्थिति सांसारिक सुख–दुख की भी हैं। यहां हर एक के हिस्से में सुख और दुःख दोनों ही आते हैं। हां, अनुपात हर एक के लिए भिन्न–भिन्न होता है।

- जरा सा समझने योग्य आयु होते ही सुख और दुःख के अस्तित्व की वास्तविकता हर पल उजागर होने लगती है। कुछ लोगों को इसी जीवन में स्वर्ग सुख भोगते हुए और कुछ लोगों को दुख के साथ नरक भी यही बिताना पड़ता है। कभी–कभी तो इंसान इतना कमजोर पड़ जाता है कि अपने हाथों अपना जीवन समाप्त करने पर उतारू हो जाता है। वास्तव में सुख के दिन बीतते पता भी नहीं चलते मगर दुःख का एक–एक पल भारी होता है।
- हर व्यक्ति के लिए सुखी होने के मायने अलग–अलग हैं। जैसे किसी को भोजन, कपड़ा और सिर छिपाने की जगह मात्र से खुशी मिल सकती है और पैसे आने पर खुश होता है लेकिन अकेले पैसे की खुशी हमारा नेतृत्व नहीं कर सकती। हर इंसान में खुशी का स्रोत उसके अंदर ही होता है। हमारे हालात हमेशा हम पर निर्भर करते हैं। खुशी का राज्य, स्वर्ग के राज्य की तरह है, जैसे एक अमीर आदमी अपनी जगह दुखी हो सकता है जबकि एक गरीब आदमी एक झोपड़ी में भी खुश हो सकता है। हर इंसान को अपने अंदर के विनम्र स्वभाव, संतोष और ईमानदारी को हमेशा जिंदा रखना चाहिए। इसी के साथ वह सुखी रह सकता है।
- यक्ष ने जब युधिष्ठिर से प्रश्न पूछा कि ऐसा कौन सा उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता है। तो उत्तर मिला– अच्छा स्वभाव ही सुखी होने का उपाय है।

इसी जीवन में यथासंभव यही प्रयास करें कि हमारे कारण किसी को दुःख न पहुंचे किसी का मन न दुखे। कोशिश करें कि किसी के आंसू पोंछ सकें। किसी का दुख कम कर सकें। किसी का दुख बांट सकें। अपने दुख के क्षणों में आपा न खोएं। जब अपना दुख असहनीय प्रतीत होने लगे तो एक नजर अपने आस–पास डाल लें। दूसरों के दुख देखकर अपना दुख आपको छोटा और बौना लगेगा।

सुखी रहने के लिए आवश्यक तत्व

- लोगों को गरीब से बैर नहीं करना चाहिए और अमीर होने पर गर्व नहीं।
- एक खुशहाल समाज की स्थापना के लिए यह जरूरी है कि हर इंसान के पास कुछ न कुछ रोजगार हो, क्योंकि बेकार आदमी समाज के लिए अभिशाप है।
- हर व्यक्ति को ईमानदार और कर्तव्यपरायण होना चाहिए।
- प्यार और विश्वास का माहौल पैदा करें।

उड़ान

– शिखा सेठ
जे.आर.एफ

पँख लगाकर उड़ना है, छूना है आसमान को
नए रास्ते की ओर, मुड़ना है मुझको
एक मंज़िल का ख्वाब देखा है, आज मैंने
उसी ख्वाब को पूरा करने चलना है, आज मुझको
पँख लगाकर आसमान में उड़ना है, आज मुझको

अनजानी ये राहें, है बहुत कठिन पर ना रुकना है मुझको
कुछ सवालों का जवाब ढूंढ़ने, आगे बढ़ना है आज मुझको
तेज़ भागते समय के साथ, आज चलना है मुझको
पँख लगाकर आसमान में उड़ना है, आज मुझको

सपने तो बहुत देखे हैं मैंने, आज हक़ीक़त में बदलना है उनको
लोगों की भीड़ में, एक पहचान बनानी है मुझको
चाँद तारों से तो नहीं, पर सबसे ऊपर उठना है मुझको
पँख लगाकर आसमान में उड़ना है, आज मुझको

माना रास्ता है बहुत कठिन, पर अब कभी ना रुकना है मुझको
पँख लगाकर आसमान में उड़ना है, आज मुझको।

★★★

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ।
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

सुखी वैवाहिक जीवन का राज़

– शाहिदा शर्मा
पी.एस.एस.

एक दंपत्ति ने जब अपनी शादी की 25 वीं वर्षगांठ मनाई तो एक स्थानीय समाचारपत्र का संवाददाता उनका साक्षात्कार लेने उनके घर जा पहुंचा। दरअसल वे दंपत्ति अपने शांतिपूर्ण और सुखमय विवाहित जीवन के लिए पूरे कस्बे में प्रसिद्ध हो चुके थे। उनके बीच कभी कोई तकरार नाम मात्र के लिए भी नहीं हुई। संवाददाता उनके सुखी जीवन का राज जानने के लिए उत्सुक था।

पति ने बताया – हमारी शादी के फौरन बाद हम लोग घूमने के लिए शिमला गए हुए थे। वहां हम लोगों ने घुड़सवारी की। मेरा घोड़ा तो ठीक था पर जिस घोड़े पर मेरी पत्नी सवार थी वह जरा सा नखरैल था। उसने दौड़ते–दौड़ते अचानक मेरी पत्नी को नीचे गिरा दिया।

पत्नी ने घोड़े की पीठ पर हाथ फेरते हुये कहा – यह पहली बार है। और फिर उसी घोड़े पर सवार हो गई।

थोड़ी दूर चलने के बाद घोड़े ने फिर उसे नीचे गिरा दिया।

पत्नी ने अबकी बार कहा – यह दूसरी बार है। और फिर उसी घोड़े पर सवार हो गई।

तीसरी बार जब घोड़े ने उसे नीचे गिराया तो मेरी पत्नी ने घोड़े से कुछ नहीं कहा, बस अपने पर्स से पिस्तौल निकाली और घोड़े को गोली मार दी।

मैं अपनी पत्नी पर चिल्लाया – "ये तुमने क्या किया! तुमने एक बेजुबान जानवर को मार दिया......! क्या तुम पागल हो गई हो?"

पत्नी ने मेरी तरफ देखा और कहा – "यह पहली बार है!"

और बस, तभी से हमारी जिंदगी सुख और शान्ति से चल रही है।

★★★

हिन्दी सप्ताह 2012 के मुख्य समारोह के अवसर पर भाषण देते हुए डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक

गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के चौथे अंक का विमोचन करते हुए डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक

गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के चौथे अंक के विमोचन के अवसर पर अधिकारीगण

डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक 'अभिव्यक्ति' के लेखक को पुरस्कृत करते हुए

डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक हिन्दी प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करते हुए

डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक 'अभिव्यक्ति' की लेखिका को पुरस्कृत करते हुए

डॉ. बी. के. मूर्ती, कार्यकारी निदेशक 'अभिव्यक्ति' के लेखक को पुरस्कृत करते हुए

हिन्दी सप्ताह 2012 के अवसर पर हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में
भाग लेते हुए सी–डैक, नोएडा के सदस्य

सी–डैक परिवार के बच्चों के लिए आयोजित सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में भाग लेती हुई बालिका

हिन्दी सप्ताह 2012 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सी–डैक, परिवार के नन्हे मुन्हें बच्चे

सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेते हुए विभिन्न कोर्सों के विद्यार्थी

सांस्कृति कार्यक्रम में भाग लेती हुई सी–डैक परिवार की बालिकाएं

श्री वी. के. शर्मा, सह निदेशक, सी–डैक, नोएडा की मेजवानी में 26 फरवरी 2013 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 25वीं बैठक के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करती हुई सुश्री जयश्री मुखर्जी, अध्यक्षा, नराकास

श्री वी. के. शर्मा, सह निदेशक, सी–डैक, नोएडा की मेजवानी में नराकास की 25वीं. बैठक को संबोधित करती हुई सुश्री जयश्री मुखर्जी, अध्यक्षा, नराकास

नराकास की 25वीं बैठक के अवसर पर सदस्यों को संबोधित करते हुए
श्री अजय कुमार, सदस्य सचिव

नैशनल फर्टिलाइजर्स लि. के सौजन्य से नराकास के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता के विजेता को पुरस्कृत करती हुई सुश्री जयश्री मुखर्जी, अध्यक्षा, नराकास

सी डैक
CDAC

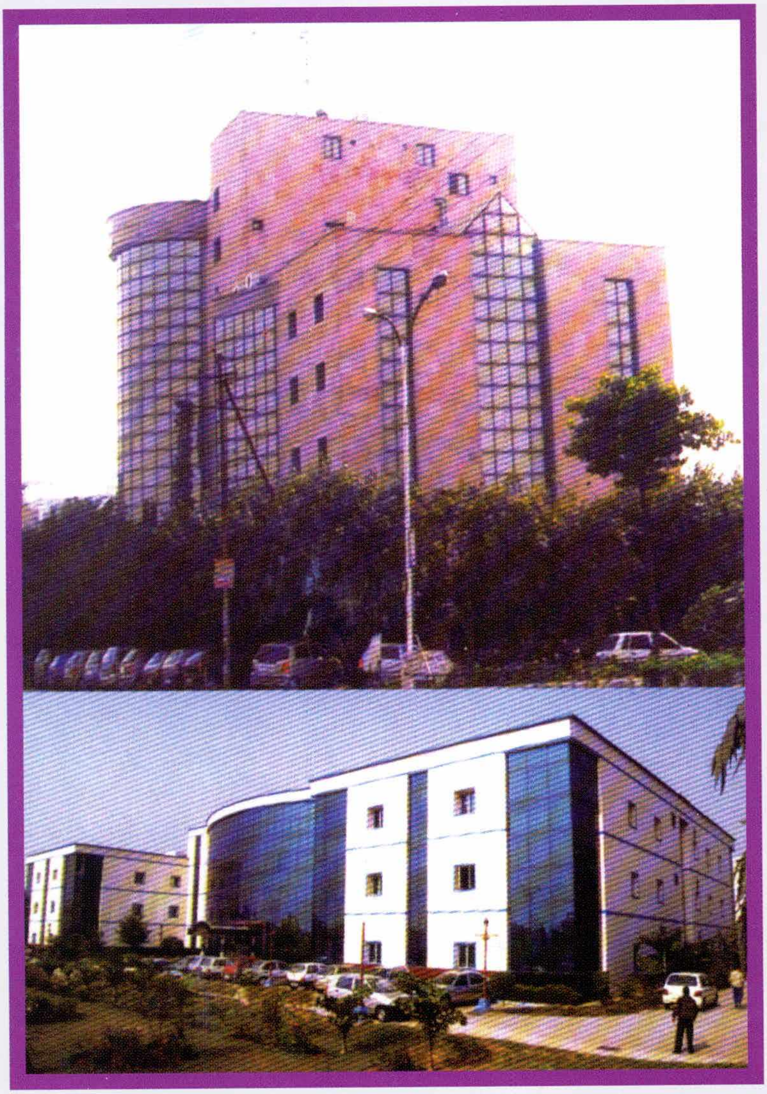

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

अनुसंधान भवन, सी-56/1, संस्थागत क्षेत्र
सैक्टर- 62, नोएडा- 201307
फोन: 0120-3063311-13, फैक्स- 0120-3063317